शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

1857 की राज्य क्रान्ति और धर्म

अल्पना पोषवाल (शोधार्थी)
विरेन्द्र कुमार (शोधार्थी)
चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

1857 की राज्य क्रान्ति को आज 158 वर्ष हो गये हैं, तब से लेकर आज तक विभिन्न देशी-विदेशी और लोक भाषाओं में इस पर विपुल साहित्य रचा गया तथा आज भी इस पर विचार विमर्श चल रहा है कि 1857 की क्रान्ति प्रगतिशील थी या नहीं ? जो नायक स्थानीय थे या जिनकी स्मृतियां धूमिल पड़ गयी थी कुछ इतिहाकार उन्हे खोज-खोज कर पूरी गरिमा और गौरव के साथ सामने ला रहे हैं। उन्होंने इस दिशा में सराहनीय कार्य किया और कई अनकहे तथा अनसुलझे पहलू जनता के समक्ष प्रस्तुत किये।

प्रस्तावना

ईस्ट इन्डिया कम्पनी का उद्देश्य प्रारम्भ में भारत में न तो राज्य स्थापित करना था और न ही ईसाई धर्म का प्रचार करना, उनका उद्देश्य सिर्फ धर्नापार्जन करना था। 1757 प्लासी युद्ध के बाद इनके भीतर लोभ पनपने लगा।

18 वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 19 वी सदी के पूर्वार्द्ध में पश्चिमी सभ्यता के शताब्दियों पुराने ढांचे को बुरी तरह झकझोर कर रख दिया। रेलवे एवं टेलीग्राफ के विकास, पश्चिमी शिक्षा का विस्तार, सती प्रथा, बली प्रथा, कन्या विवाह जैसी प्रथाओं के विरूद्ध कानून बनाया जाना, धार्मिक अक्षमताओं पर कानून, विधवा विवाह कानून इत्यादि सरकारी कार्यो से भारतीय समाज अपनी धार्मिक मान्यताओं व निजी अस्तित्व के बिखराव के प्रति चिन्तित हो उठा। अविश्वास और सन्देह के उस काल में भारतीय अंग्रेजो के हर कदम को कट्टरपंथी हिन्दू यह समझने लगे कि अंग्रेज सरकार उनको सामूहिक रूप से ईसाई बनने की बाध्य कर रही हैं। एक प्रतिष्ठित अंग्रेज मेंलकम लेबिन जो मद्रास हाईकोर्ट के जज और मद्रास कौसिल के सदान्य रह चुके थे, ने अपनी पुस्तक 'इंडियन रिवोल्ट' में स्वयं इस बात को स्वीकार किया कि ''हमने भारतीयो को जाति भ्रष्ट कर दिया।'' उनके उत्तराधिकार के नियमों रद्द कर दिया। हमने इनकी विवाह की संस्थाओं को बदल दिया, उनके धर्म के पवित्रतम रिवाजों की अवहेलना की हैं, उनके मंदिरों की जायदादो को जप्त कर लिया है। अपने सरकारी लेख में हमने उन्हें नास्तिक कहकर कलंकित किया। ''इस प्रकार यह प्रमाणित हो जाता है अंग्रेज सरकार के उपयुक्त कार्य से भारतीयों की अपनी धार्मिक मान्यताओं के नष्ट भ्रष्ट ही जाने का खतरा उत्पन्न हो गया और इसे लेकर उनमें भारी असन्तोष का उपजना स्वाभाविक ही था।

धर्म और क्रांति

ईसाई मिशनरियों और गिरजाघरों ने जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर दबाव बनाया कि जहां भी हमारी प्रजा हो उनको नैतिक शिक्षा देने के लिये उन्हे अवश्य जाना चाहिये फलतः 1813 के चार्टर

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

एक्ट के तहत उनको भारत में काम करने की वैधता मिल गयी। भारत में इन मिशनरियों की बाढ़ आ गई, भारतीयों की विपुल सम्पत्ति इन मिशनरियों की गतिविधियों के लिये मुहैय्या कराई गई। चूकिं यह शासको का धर्म था इसलिये भारतीय समाज में मौजूद धर्मो से श्रेष्ठ और ऊँचा माना जाने लगा। भारत की जनता में भले ही धर्म के प्रति इस कार्य से असंतोष पनपा और ब्रिटेन में यहां के शासको को लोकप्रियता मिली।

1857 में मैगलास (बोर्ड आफ डाईरेक्टर्स के अध्यक्ष) ने ब्रिटिश संसद में कहा था कि-

"भाग्य ने इग्लैण्ड को हिन्दुस्तान का विस्तृत साम्राज्य सौंपा है ताकि ईसा का झण्डा विजयोल्लास से भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक लहराता रहे। प्रत्येक व्यक्ति को इस बात के लिये अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिये कि समूचे भारत को ईसाई बनाने के काम में उस देश में किसी तरह का विलम्ब न होने पाये।

इसी उद्देश्य को सामने रखकर ईसाई प्रचारको की सेना सारे देश में फैल गयी। ये लोग चौराहों पर भाषण देकर हिन्दू और मुसलमानों के धर्मो का मजाक उडानें लगे। हिन्दूओं के देवी-देवताओं और मुसलमानों के पैगम्बरों के लिये अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करने लगे तथा साथ ही ईसाई धर्म की तारीफों के पुल बांधने लगे। इस प्रकार भारतीयों के धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने का प्रयत्न आरम्भ हुआ। सैकडों वर्षो से चली रूढीयों तथा सामाजिक प्रथा के विरूद्ध कानून बनाये जाने लगे, विधवा विवाह वैध घोषित किया गया। धर्मान्तरण करने पर कौटुम्बिक सम्पत्ति का वारिस बने रहने के लिये कानून बनाया।

देश में नवीन शिक्षा प्रणाली स्थापित की गई, इस प्रणाली के जनक मैकाले के शब्दों में इसका उद्देश्य था। "हमे एक ऐसे वर्ग का निर्माण करना है जो करोडो भारतीय और हमारे बीच सम्बन्ध स्थापित करें"। इन स्कूलों में पढने वाले विद्यार्थीयों द्वारा ईसाई धर्म की दीक्षा देने पर लोग इतने उत्तेजित हो गये कि उन्होने 70,000 हस्ताक्षरों के साथ सरकार के पास एक प्रार्थना पत्र भेजा कि सरकारी स्कूल तो अवश्य हो पर उनमें बाईबिल न पढ़ाई जाये।

हेनरी लारेंस, रार्बट मांटगुमरी, मेक लियोड, कर्नल एडवर्डस सहित सारे शासको ने ईसाई मत के सरकारी स्तर पर प्रसार के अनेक प्रयास किये और तरह तरह से हिन्दू और मुस्लिम धर्मों पर बंदिशों की कोशिश की। शोर के नाम पर उनके कीर्तन और अजानो पर रोक लगाने से, सरकारी स्तर पर त्यौहार के दिन अवकाश खत्म करने की साजिश तक करने लगें। मिशनरी के एक प्रमुख नेता विलियम कैरी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "ईसाई बनाने के लिये भारतीयों को अंग्रेजीयत जीवन शैली में ढालना है। वे खुलेआम यह प्रचार कर रहे थे कि ब्रिटिश राज भारतीयों के लिये ईश्वरीय वरदान हैं, भारत की शैतानी और असभ्य संस्कृति को खत्म कर मिशनरीयों के देवदूत उनको सभ्य बनायेगे और सच्चे धर्म की राह दिखायेगे।" इन्ही प्रति क्रियाओं के कारण ब्रहम समाज और दूसरे कई धार्मिक संगठन और केन्द्र बने, यही स्थिति मुस्लिम समाज में भी हुई और धार्मिक असुरक्षा के कारण एक तरह की कट्टरता की शुरूआत हुई।

जिस भारतीय सेना ने अपना रक्त बहाकर तथा अपने देशहित की तिलांजलि देकर अंग्रेजो को इस देश का सर्वश्रेष्ठ शासक बनाया उस सेना के प्रति भी उनका व्यवहार अब पहले की तरह मीठा और सहानुभूति का नहीं रहा। ईसाई मत के प्रचार प्रसार के प्रति

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

उत्साह में अंग्रेजो की सबसे बड़ी अदूरदर्शिता थी फौज में ईसाई मत को लागू करने की कोशिश करना इस महत्वाकांक्षी हठ की इतनी बडी कीमत चुकानी पड़ेगी इसका उनको तनिक भी भान नहीं था। मद्रास के गर्वनर विलियम बेंटिक ने सेना के अन्दर ईसाई मत की थोड़ी उत्तेजनात्मक गति दी जिसका नतीजा 1806 का बैल्लोर विद्रोह के रूप में सामने आया। धार्मिक विरोध सबसे पहले 1824 में भड़का जब बैरकपुर की 47 वीं रेजीमेंट को बर्मा जाने का आदेश दिया गया। एक मान्यता के अनुसार हिंदू के लिये समुद्र को पार करना धर्म के विरूद्ध था। इसलिये सिपाहियों ने इन्कार कर दिया, आदेश का विरोध करने वाले सिपाहियों को फाँसी दे दी गयी।

1832 में बजाफ्ता कानून पास किया गया जो ईसाई मत का अनुयायी हो जायेगा उसका अपनी पैतृक सम्पत्ति पर स्थायी अधिकार हो जायेगा। जब एक ओर में ईसाई मिशनरियां भारत में अपने पैर पसार रहीं थी, तब दूसरी ओर अंग्रेज हजारों पुरानी मस्जिद और मंदिरों के जमीन-जागीरे जब्त कर रहे थें। भारत के गर्वनर जनरल लार्ड कैनिंग ने लाखो रूपये में ईसाई मत प्रचारको को बाँटे। सबसे अधिक आपत्तिजनक बात यह है कि पादरियों, बिशपो और आर्कविशपो को भारतीय खजाने से ऊँची तनखवाह दी जाती थी। बंगाल के ईसाई प्रचारक अलेग्जेण्डर डफ ने चर्चो को आहवान किया कि- "कितना ही त्याग क्यों न करना पड़े, उठो! और जैसा की आज तक नहीं हुआ, वैसा पुरी लगन के साथ भारत के विशाल प्रदेशों में तीन हजार साल से जमे शैतान के राज को ध्वस्त कर ईसा मसीह के राज को कायम करने में जुट जाओ।

इस प्रकार अंग्रेजो की ईसाई मत की कट्टरता और भारतीय संस्कृति पर आघात करने से भारतीय जनता में भारी असन्तोष फैल गया। राष्ट्र का पुरूषार्थ अपने खोये हुए आत्म सम्मान को पुनः एक बार प्राप्त करने के लिये आत्म विश्वास के साथ फिरंगी सत्ता को उखाडने के लिये उठ खड़ा हुआ। इस प्रकार अंग्रेजों के धार्मिक कट्टरता ने भारतीय जन मानस की धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाई जिसके परिणामस्वरूप 1857 के विद्रोह को बल मिला।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *1857 की राजक्रान्ति विचार और विश्लेषण - शिशिर कर्मेन्दु*
2. *नाना साहब पेशवा - हार्डिकर श्री निवास बालाजी*
3. *1857 और भारतीय नवजागरण - सक्सेना प्रदीप*
4. *देश की बात - देउस्कर सखाराम*
5. *1857 - सेन एस.एन.*
6. *1857 का विप्लव - कुमार विघ्नेश, कुमार मुदित*